दैनिक भास्कर

सांगली की 13 साल की बच्ची को मुंबई में मिला जीवनदान

• अग्नाशय की दुर्लभ बीमारी से थी पीड़ित • अनुवांशिक स्थिति के कारण बच्ची को हुई थी यह समस्या

वरिष्ठ संवाददाता | मुंबई

दुर्लभ अग्नाशय (पैंक्रियास) की बीमारी से पीड़ित सांगली की एक 13 साल की बच्ची का मुंबई के निजी अस्पताल में इलाज किया गया। हृदय के इलाज में कारगर एंजियोग्राफी की मदद से इस बच्ची को डॉक्टरों ने नई जिंदगी दी है। कई दिनों से असहनीय पेट दर्द से पीड़ित बच्ची को काफी राहत मिली है। अदिती कांबले दो साल पहले अग्नाशय की दुर्लभ बीमारी से पीड़ित हो गई थी।

गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट के पास उसका इलाज शुरू था। पर, पेट दर्द कम नहीं हो रहा था। कुछ दिन बाद असहनीय दर्द और उल्टी होने के कारण माता-पिता उसे मुंबई में इलाज के लिए लीलावती अस्पताल लाए।

बालरोग सर्जन डॉ. राजीव रेडकर ने बताया कि अदिती के पेट का सीटी स्कैन करने पर एक स्यूडोसिस्ट (अग्नाशय में तरल पदार्थ से भरा द्रव्यमान) और स्यूडोसिस्ट के भीतर गैस्ट्रो-डुओडेनल धमनी के रिसाव यानी स्यूडो-एन्यूरिज्म का पता चला, जो विशेष रूप से बच्चों में एक दुर्लभ और गंभीर समस्या है। मरीज को अनुवांशिक कारणों से यह स्थिति झेलनी पड़ी, क्योंकि उसके पिता भी अग्नाशय की बीमारी से जूझ रहे थे। अग्न्याशय के कार्य में कमी के कारण विकास अवरुद्ध हो गया और अदिती पेट में तीव्र दर्द होने लगा। हालांकि तुरंत इलाज के कारण बच्ची को नया जीवन मिला है।

10 लाख में से एक बच्चे में पाई जाती है बीमारी

डॉ. राजीव ने बताया कि अग्नाशय के स्यूडोसिस्ट में रिसाव होने वाले स्यूडोएन्यूरिज्म की घटना दुर्लभ समस्या है, जो 10 लाख में से एक बच्चे में पाई जाती है। उन्होंने बताया कि इस मामले में इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट की मदद से एन्यूरिज्म तक पहुंचने के लिए उन्नत एंजियोग्राफिक तकनीकों का उपयोग किया गया, जिससे रक्तस्राव को रोका गया और एन्यूरिज्म को नष्ट किया गया। गैस्ट्रोडोडेनल धमनी (जीडीए) एन्यूरिज्म के एंजियोग्राफिक एम्बोलिजेशन नामक यह प्रक्रिया एक घंटे तक चली।